इबरत अंगेज़ वाक़िआत व इरशादात
पर मुशतमिल हसीन गुलदस्ता

असबाक़-ए-इबरत

अज़

मौलाना हाफ़िज़ तौहीद अहमद ख़ाँ रज़वी

तहसीनी फ़ाउन्डेशन

बरेली शरीफ़

इबरत अंगेज़ वाक़िआत व इरशादात
पर मुशतमिल हसीन गुलदस्ता

असबाक़–ए–इबरत

अज़:

(मौलाना हाफ़िज़) तौहीद
अहमद ख़ाँ रज़वी

नाशिर:

तहसीनी फ़ांउन्डेशन

मस्जिद सुल्तान जहाँ, चक महमूद, तहसीनी नगर,
पुराना शहर, बरेली शरीफ़
फ़ोन न0. 09897460733, 07417998845

दुआइया कलिमात

अज़ः– हज़रत अल्लामा ख़ुर्शीद अहमद साहब मिस्बाही

प्रिन्सिपल जामिया तहसीनिया ज़िया–उल–उलूम, कांकर टोला, बरेली शरीफ़

मौलाना तौहीद अहमद ख़ाँ रज़वी सल्लमहू का किताबचा जो कि वअज़ व नसीहत पर मुशतमिल है, माशाअल्लाह बहुत खूब है। अल्लाह तआ़ला इसको मक़बूल फ़रमाए और इसके ज़रिए लोगों को ज़्यादा से ज़्यादा नफ़ा हासिल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। और मुअल्लिफ़ मौसूफ़ की दीनी ख़िदमात को क़बूल फ़रमाए और उनको ज़्यादा से ज़्यादा दीने हक़ की तबलीग़ व इशाअत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

मुहम्मद ख़ुर्शीद अहमद मिसबाही

الحمد للّٰه رب العٰلمين وا لصلوٰة والسلام

علىٰ سيد الانبياء والمرسلين

اما بعد فاعوذ باللّٰه من الشيطٰن الرجيم

بسم اللّٰه الرحمٰن الرحيم

जगह जी लगाने की दुनिया नहीं है
यह इबरत की जा है तमाशा नहीं है

इस फ़ानी दुनिया में किसी को हमेशा नहीं रहना है बल्कि एक न एक दिन हर किसी को यह दुनिया छोड़कर आख़िरत का सफ़र तय करना है। मगर फिर भी ग़ाफ़िल लोग इस फ़ानी दुनिया की चन्द दिनों की ऐशो इशरत की वजह से मसरूर, मौत की सख़्तियों से ग़ाफ़िल और दुनिया की लज़्ज़तों में बद—मस्त हैं। अहल व अयाल की चन्द दिनों की उन्सियत और दोस्तों की वक़्ती महब्बत में अंधेरी क़ब्र को भूले बैठे हैं। मगर अचानक मौत का फ़िरिश्ता आएगा और उनकी सारी उम्मीदें ख़ाक में मिल कर रह जाएंगी।

कामयाब शख़्स वही है जो मौत से पहले ख़्वाबे ग़फ़लत से बेदार हो जाए, गुनाहों से नफ़रत करने लगे और अपने गुनाहों से सच्ची तौबा करके अल्लाह तआला की फ़रमाँ—बरदारी में लग जाए। अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

दुनिया की ज़िन्दगी का धोका

अफ़सोस है उस शख़्स पर जो चन्द दिनों की दुनिया की ज़िन्दगी के धोके में पड़ कर मौत की सख़्तियों, क़ब्र की तारीकियों और हिसाब व किताब को भूल जाए।

अल्लाह तआ़ला दुनिया के धोके से बचने के लिए लोगों को ख़बरदार करते हुए इरशाद फ़रमा रहा है:

يٰاَيُّهَاالنَّاسُ اِنَّ وَعْدَاللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ
الْحَيٰوةُالدُّنْيَاوَلَايَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ۔

तर्जमाः— ऐ लोगो! बेशक अल्लाह का वादा सच है तो हरगिज़ तुम्हें धोका न दे दुनिया की ज़िन्दगी और हरगिज़ तुम्हें अल्लाह के हुक्म पर फ़रेब न दे वह बड़ा फ़रेबी (यानी शैतान)।

(पारा 22, सूरा—ए फ़ातिर, आयत 5)

अल्लाह तआ़ला ने इस आयत में बन्दों को ख़बरदार किया है कि अल्लाह तआ़ला का वादा सच है, मरने के बाद ज़रूर उठना है और हर एक को अपने आमाल का हिसाब अल्लाह तआ़ला की बारगाह में देना है, तो ऐसा न करना कि दुनिया की लज़्ज़तों में मशग़ूल हो कर आख़िरत को भूल जाओ।

नुक़सान में कौन ?

अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है:

يٰاَيُّهَاالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ عَنْ
ذِكْرِاللّٰهِ. وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ.

तर्जमाः– ऐ ईमान वालो! तुम्हारे माल न तुम्हारी औलाद कोई चीज़ तुम्हें अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न करे और जो ऐसा करे तो वही लोग नुक़सान में हैं। (पारा 28, सूरा–ए मुनाफ़िक़ून, आयत 9)

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों को हिदायत फ़रमाई कि ऐसा न हो कि तुम दुनिया में मशगूल हो कर दीन को फ़रामोश कर दो और माल की महब्बत में अपने हाल (अन्जाम) की परवाह न करो और औलाद की ख़ुशी के लिए आख़िरत की राहतों से ग़ाफ़िल रहो। और यह भी बता दिया कि जो ऐसा करे यानी इस ख़त्म हो जाने वाली दुनिया के पीछे आख़िरत की बाक़ी रहने वाली नेमतों की परवाह न करे वही घाटे में है।

और फ़रमाता है:

اِنَّمَا اَمْوَالُكُمْ وَ اَوْلَادُكُم فِتْنَةٌ. وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ اَجْرٌ عَظِيْمٌ.

तर्जमाः– तुम्हारे माल और तुम्हारे बच्चे जाँच ही हैं और अल्लाह के पास बड़ा सवाब है।

अपने नफ़्स का मुहासबा करना

इन्सान को चाहिए कि हर वक़्त अपने आमाल का मुहासबा करता रहे। अल्लाह तआ़ला नफ़्स के मुहासबे का हुक्म देते हुए इरशाद फ़रमा रहा हैः

يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ. وَاتَّقُوا اللّٰهَ. اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌ بِمَا تَعْمَلُوْنَ.

तर्जमाः— ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और हर जान देखे कि कल के लिए क्या आगे भेजा और अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है।

इस आयत में इस बात की तरफ़ इशारा है कि इन्सान अपने गुज़िश्ता आमाल का मुहासबा करे। इसी लिए अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रदि अल्लाहु तआ़ला अन्हु ने फ़रमाया कि "इस से पहले कि तुम्हारा मुहासबा हो, तुम ख़ुद अपना मुहासबा कर लो और इस से पहले कि तुम्हारे आमाल तोले जाएं तुम ख़ुद अपने आमाल तोल लो"।

मुहासबा—ए नफ़्स और अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म

रदि अल्लाहु तआ़ला अन्हु

जब रात होती तो अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रदि अल्लाहु तआ़ला अन्हु अपने

क़दमों पर चाबुक मारते और अपने नफ़्स से कहते तू ने आज क्या अमल किया?

ज़रा ग़ौर कीजिए! अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रदि अल्लाहु तआ़ला अन्हु जिनको हयात ही में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने जन्नत की ख़ुशख़बरी दे दी थी, वह अपने नफ़्स का किस तरह मुहासबा फ़रमा रहे हैं। और हम ख़ताकार सियाहकार इन्सनों का क्या हाल है? रात व दिन ग़फ़लत में गुज़ार रहे हैं फिर भी अपने नफ़्स का मुहासबा नहीं करते।

अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़

सच्चा और कामिल मोमिन वही है जो अल्लाह तआ़ला की रहमत से मग़फ़िरत की उम्मीद रखे और उसके अज़ाब से डरता भी रहे।

अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है:

فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَاخْشَوْنِ.

तर्जमा:– लोगों से ख़ौफ़ न करो और मुझ से डरो।
(पारा 6, सूरा–ए माइदा, आयत 44)

रसूल अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया "जब कोई बन्दा ख़ौफ़े इलाही से काँपता है तो उसके गुनाह उसके बदन से ऐसे झड़ जाते हैं जैसे दरख़्त को हिलाने से उसके पत्ते

झड़ जाते हैं। (अत–तरग़ीब वत–तरहीब)

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने उन सात आदमियों का ज़िक्र फ़रमाया कि जिस दिन कोई साया न होगा तो अल्लाह तआ़ला उन्हें अपने अर्श के साये में जगह देगा, उनमें से एक वह आदमी है जिसने तन्हाई में अल्लाह तआ़ला के अज़ाब और वईद को याद किया और अपने कुसूर को याद करके ख़ौफ़े इलाही से उसके आँसू बह निकले और ख़ौफ़े इलाही की वजह से वह नाफ़रमानी और गुनाहों से बाज़ आ गया। (बुख़ारी शरीफ़)

हज़रत इब्ने अब्बास रदि अल्लाहु तआ़ला अन्हुमा से मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि "दो आँखें ऐसी हैं जिन्हें जहन्नम की आग नहीं छुएगी। एक वह आँख जो आधी रात में अल्लाह तआ़ला के ख़ौफ़ से रोई और दूसरी वह आँख जिसने राहे ख़ुदा में निगहबानी करते हुए रात गुज़ारी। (सुनने तिर्मिज़ी)

हज़रत अबू हुरैरह रदि अल्लाहु तआ़ला अन्हु से मरवी है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया "क़ियामत के दिन हर आँख रोएगी मगर जो आँख अल्लाह की हराम की हुई चीज़ों से रुक गई और जिस आँख से ख़ौफ़े इलाही की वजह से मक्खी के सर के बराबर आँसू निकला वह रोने से महफ़ूज़ रहेगी"। (अत–तरग़ीब वत–तरहीब)

जिन बन्दों के अन्दर अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ है, अल्लाह तआ़ला उनको बशारत देते हुए इरशाद फ़रमा रहा है:

رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ. ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهٗ.

तर्जमा:– अल्लाह उन से राज़ी और वह उस से (अल्लाह तआ़ला से) यह उसके लिए है जो अपने रब से डरे। (पारा 30, सूरा–ए बय्यिना, आयत 8)

और इरशाद फ़रमाता है:

سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى.

तर्जमा:– अनक़रीब नसीहत मानेगा (वह) जो डरता है। (पारा 30, सूरा–ए अअ़्ला, आयत 10)

नफ़्स के साथ जिहाद

नबीए करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का फ़रमाने आलीशान है "नफ़्स के साथ जिहाद बेहतरीन जिहाद है।" (बैहक़ी)

सहाबा–ए किराम रिदवानुल्लाहि तआ़ला अलैहिम अजमईन जब जिहाद से वापस आते तो कहते हम छोटे जिहाद से बड़े जिहाद की तरफ़ लौट आए हैं।

सहाबा–ए किराम रदि अल्लाहु तआ़ला अन्हुम ने नफ़्स, शैतान और ख़्वाहिशात से जिहाद को काफ़िरों के साथ जिहाद करने से चन्द वजहों से अकबर और अज़ीम कहा। एक तो यह कि नफ़्स के साथ जिहाद हमेशा जारी रहता है और काफ़िरों के साथ कभी कभी

होता है, दूसरी वजह यह है कि काफ़िरों के साथ जिहाद में ग़ाज़ी अपने दुशमन को सामने देखता रहता है मगर शैतान नज़र नहीं आता है और दिखाई देने वाले दुशमन के मुक़ाबले छुप कर वार करने वाले दुशमन से लड़ाई ज़्यादा सख़्त होती है, तीसरी वजह यह है कि काफ़िर के साथ ग़ाज़ी की हमदर्दियाँ बिल्कुल नहीं होतीं और शैतान के साथ जिहाद करने में नफ़्स और ख़्वाहिशात शैतान की मददगार ताक़तों में शुमार होते हैं।

मुसलमानो! यह दुनिया चन्द रोज़ा है इसकी रंगीनियों में मस्त हो कर अपनी आख़िरत बर्बाद मत करो, हर वक़्त अपने नफ़्स का मुहासबा करते रहो, उसको नेकियों पर उभारते रहो और बुराइयों से उसको रोकते रहो।

अल्लाह तआ़ला ख़्वाहिशात से बाज़ रहने वालों को जन्नत की ख़ुशख़बरी देते हुए इरशाद फ़रमा रहा है:

وَاَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى
فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَاوٰى.

तर्जमा:– और वह जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरा और नफ़्स को ख़्वाहिश से रोका तो बे–शक जन्नत ही उसका ठिकाना है।

(पारा 30, सूरा–ए नाज़िआ़त, आयत 40 व 41)

और फ़रमाता है:

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ.

तर्जमा:– और जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरे उसके दिए दो जन्नतें हैं।

मौत

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का फ़रमाने आलीशान है:

"लज़्ज़तों को मिटाने वाली (यानी मौत) को कसरत से याद किया करो"। (सुनने तिर्मिज़ी)

इस फ़रमान में मौत का कसरत से ज़िक्र करने को कहा गया है ताकि इन्सान मौत को याद करके दुनिया की ख़त्म हो जाने वाली लज़्ज़तों से किनारा कश हो जो जाए और अल्लाह तआ़ला का फ़रमाँबरदार बन्दा बन जाए।

हज़रत अनस रदि अल्लाहु तआ़ला अन्हु से मरवी है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया "मौत को कसरत से याद करो इससे गुनाह ख़त्म हो जाते हैं और दुनिया से बे–रग़बती बढ़ती है"। (कन्ज़ुल उम्माल)

होशियार कौन ?

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रदि अल्लाहु तआ़ला अन्हुमा से मरवी है कि मैं दसवाँ शख़्स था

जो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की मजलिस में हाज़िर था, एक अन्सारी जवान ने पुछा या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलै–क वसल्लम! सबसे ज़्यादा बा–इ़ज़्ज़त और होशियार कौन है? आप ने फ़रमाया जो मौत को बहुत याद करता है और उसके लिए ज़बरदस्त तैयारी करता है वह होशियार है और ऐसे ही लोग दुनिया और आख़िरत में बा–इ़ज़्ज़त होते हैं।

(सुनने इब्ने माजा)

एक मरतबा हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम मस्जिद की तरफ़ तशरीफ़ ले जा रहे थे कि आप ने ऐसी जमाअ़त को देखा जो हँस–हँस कर बातें कर रहे थे, आप ने फ़रमाया मौत को याद करो, रब्बे ज़ुल्जलाल की क़सम जिसके क़ब्ज़ा–ए क़ुदरत में मेरी जान है, जो मैं जानता हूँ अगर वह तुम्हें मालूम हो जाए तो कम हँसों और ज़्यादा रोओ। (एहया–उल–उलूम)

मौत की सख़्ती

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अल्लाह तआ़ला के हुक्म से मुर्दों को ज़िन्दा किया करते थे। कुछ काफ़िरों ने आप से कहा कि आप तो फ़ौरन मरे हुए को ज़िन्दा कर दिया करते हैं, क्या पता वह न भी मरा हो, किसी पहले ज़माने के मुर्दे को ज़िन्दा करके दिखाओ। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया तुम ख़ुद ही बताओ कि

किस मुर्दे को ज़िन्दा करूँ, उन्होंने कहा कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के बेटे साम को ज़िन्दा करके दिखाओ। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम उनकी क़ब्र पर तशरीफ़ लाए, आप ने दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी और अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की, वह ख़ुदा के हुक्म से ज़िन्दा हो गए। तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने देखा कि उनके सर और दाढ़ी के बाल सफ़ेद हो गए। आप ने फ़रमाया ऐ साम! यह सफ़ेदी कैसी है? यह आपके ज़माने में तो नहीं थी। उन्होंने कहा कि जब मैं ने आपकी आवाज़ सुनी तो मैं समझा कि शायद क़ियामत क़ाइम हो गई, क़ियामत के ख़ौफ़ से मेरे सर और दाढ़ी के बाल सफ़ेद हो गए। हज़रत ईसा अलैहिसलाम ने फ़रमाया तुम्हें इन्तिक़ाल किए हुए कितने बरस हो गए? वह बोले कि पूरे चार हज़ार बरस, और अब तक मौत की तल्ख़ी और नज़अ़ के वक़्त की तकलीफ़ और बे–चैनी बाक़ी है।

(दुर्रतुल वाइज़ीन)

ज़रा ग़ौर करो कि नज़अ़ के वक़्त इन्सान को कितनी तकलीफ़ होती है कि चार हज़ार बरस का लम्बा अरसा गुज़र जाने के बाद भी नज़अ़ के वक़्त की तकलीफ़ और बेचैनी नहीं गई।

फ़रमाने नबवी है “अगर तुम्हारी तरह जानवर मौत को जान लेते तो उनमें कोई मोटा जानवर खाने को न मिलता”। (कन्ज़ुल उम्माल)

यानी मौत का जितना इल्म इन्सान को है अगर उतना इल्म जानवरों को होता तो वह सब मौत के डर से सूख जाते और कोई मोटा जानवर खाने को न मिलता।

क़ब्र के हालात

अंधेरा घर अकेली जान दम घुटता दिल उकताता
ख़ुदा को याद कर प्यारे वह साअत़ आने वाली है

इन्सान को इस दुनिया से रुख़सत होने के बाद आख़िरत की मन्ज़िलों में सबसे पहली जिस मन्ज़िल का सामना करना पड़ता है वह क़ब्र है।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ۔

तर्जमा:– तुम्हें ग़ाफ़िल रखा माल की ज़्यादा तलबी ने यहाँ तक कि तुम ने कब्रों का मुँह देख लिया।

(पारा 30, सूरा–ए तकासुर, आयत 1)

फ़रमाने नबवी है कि जब मय्यत को क़ब्र में रखा जाता है तो क़ब्र कहती है ऐ इन्सान! तुझ पर अफ़सोस है, तुझे मेरे बारे में किस चीज़ ने धोके में डाला था? क्या तुझे मालूम नहीं था कि मैं आज़माइशों और कीड़े मकोड़ों का घर हूँ, जब तू मुझ पर से आगे पीछे क़दम रखता गुज़रा करता था तो तुझे

कौन सा गुरूर घेरे होता था? अगर मय्यत नेक होती है तो उसकी तरफ़ से कोई जवाब देने वाला क़ब्र को जवाब देता है क्या तुझे मालूम नहीं है यह शख़्स नेकियो का हुक्म देता और बुराइयों से रोका करता था। क़ब्र कहती है जब तो मैं इसके लिए सबज़े में तबदील हो जाऊँगी, इसका जिस्म नूरानी बन जाएगा और इसकी रूह अल्लाह तआ़ला के कुर्बे रहमत में जाएगी। (अल मोजमुल कबीर लित्तबरानी)

मुहम्मद बिन सबीह रहमतुल्लाह तआ़ला अलैहि कहते हैं कि मुझ तक यह रिवायत पहुँची है कि जब आदमी क़ब्र में रखा जाता है और उसे अज़ाब दिया जाता है तो उसके क़रीबी मुर्दे कहते हैं ऐ अपने भाइयों और हमसायों (पड़ोसियों) के बाद दुनिया में रहने वाले! क्या तू ने हमारे जाने से कोई नसीहत हासिल न की और तेरे सामने हमारा मर कर क़ब्रों में दफ़्न हो जाना कोई क़ाबिले ग़ौर बात न थी? तू ने हमारी मौत से हमारे आमाल ख़त्म होते देखे, लेकिन तू ज़िन्दा रहा और तुझे अमल करने की मोहलत दी गई मगर तू ने इस मोहलत को ग़नीमत न जाना और नेक आमाल न किए। और उससे ज़मीन का वह टुकड़ा कहता है ऐ ज़ाहिरी दुनिया पर इतराने वाले! तू ने अपने उन रिश्तेदारों से इबरत क्यों न हासिल की जो दुनियावी नेमतों पर इतराया करते थे मगर वह तेरे सामने मेरे पेट में गुम हो गए। उनकी मौत उन्हें क़ब्रों मे ले आई

और तू ने उन्हें कन्धों पर सवार होकर इस मन्ज़िल की तरफ़ आते देखा कि जिससे कोई राहे फ़रार (भाग जाने का रास्ता) नहीं है। (मुकाशफ़तुल कुलूब)

मुसलमानो! नहीं मालूम कि किस वक़्त मौत का फ़िरिश्ता आ जाए और हमें इस फ़ानी दुनिया को अलवदा कहना पड़े। अभी जो मोहलत है इस मोहलत को ग़नीमत जानो। नेक आमाल करो और बुराइयों से बचो और बचाओ।

क़ब्र और हज़रत उस्माने ग़नी रदि अल्लाहु तआला अन्हु

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रदि अल्लाहु तआला अन्हु जब किसी क़ब्र के पास खड़े होते तो इतना रोते थे कि आँसुओं से उनकी दाढ़ी तर हो जाया करती थी, तो किसी ने कहा (ऐ अमीरुल मोमिनीन) आप जन्नत व दोज़ख का ज़िक्र करते हैं तो नहीं रोते और क़ब्र के पास क्यों रोते हैं? तो आप ने फ़रमाया कि यक़ीन रखो कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि क़ब्र आख़िरत की मन्ज़िलों में से पहली मन्ज़िल है अगर इससे नजात मिल गई तो इसके बाद की मन्ज़िलें इससे ज़्यादा आसान होंगी। और अगर इससे नजात न मिली तो इसके बाद की मन्ज़िलें इससे ज़्यादा सख़्त होंगी। और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम

ने यह भी फ़रमाया है कि क़ब्र से बढ़कर ख़ौफ़नाक मन्ज़र कभी मैं ने देखा ही नहीं। (मिश्कात)

ज़रा सोचो! हज़रत उस्माने ग़नी रदि अल्लाहु तआला अन्हु वह हैं जिनका हर लम्हा ज़िक्रे इलाही में गुज़रा करता था, इसके बावजूद भी वह अज़ाबे क़ब्र के ख़ौफ़ से इतना रोते थे कि आँसुओं से दाढ़ी तर हो जाया करती थी। और एक हम हैं कि नेकियाँ तो छोड़िए बुराइयों से बाज़ नहीं आते। काश कि हम ग़ौर करें, ग़फ़लत की नींद से बेदार हों, बुराइयों से बाज़ आएं और दूसरों को बाज़ रखें और दुनिया की रंगीनियों को छोड़कर आख़िरत की तैयारी करें।

जहन्नम

अल्लाह तआला का इरशाद है:

اِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَاداً. لِّلطّٰغِيْنَ مَاٰباً. لّٰبِثِيْنَ فِيْهَا اَحْقَاباً. لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا بَرْداً وَلَا شَرَاباً. اِلَّا حَمِيْماً وَّ غَسَّاقاً. جَزَآءً وِّفَاقاً. اِنَّهُمْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ حِسَاباً.

तर्जमाः— बे—शक जहन्नम ताक में है, सरकशों का ठिकाना, उसमें क़रनों रहेंगे। उसमें किसी तरह की ठन्डक का मज़ा न पाएंगें और न कुछ पीने को मगर खौलता पानी और दोज़खियों का जलता पीप, जैसे को तैसा बदला। बे—शक उन्हें हिसाब का ख़ौफ़ न था।

(पारा 30, सूरा—ए नबा, आयत 21 ता 25)

जहन्नम एक तारीक और तकलीफ़ देने वाला घर है, जितनी भी आफ़तें, मुसीबतें और तकलीफ़ें हो सकती हैं वह सब उस में हैं। इन्सान जितना भी जहन्नम की आफ़तों और तकलीफ़ों के बारे में सोच सकता है वह अल्लाह तआ़ला के अज़ाब का एक छोटा सा हिस्सा होगा।

कु़र्आने करीम में अल्लाह तआ़ला ने जहन्नम से डरने और उससे बचने का हुक्म दिया है। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْ وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ۔

तर्जमा:– तो डरो उस आग से जिसके ईंधन आदमी और पत्थर हैं तैयार रखी है काफ़िरों के लिए।

(पारा 1, सूरा–ए बक़रा, आयत 24)

और फ़रमाता है:

يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ
وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَا اَمَرَهُمْ
وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ۔

तर्जमा:– ऐ ईमान वालो! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिसके ईंधन आदमी और पत्थर हैं, उस पर सख़्त कर्रे फ़िरिश्ते मुक़र्रर हैं जो अल्लाह का हुक्म नहीं टालते और जो उन्हें हुक्म हो वही करते हैं।

(पारा 28, सूरा–ए तहरीम, आयत 6)

हदीस शरीफ़ में है कि जो बन्दा जहन्नम से पनाह माँगता है, जहन्नम कहता है ऐ रब! यह मुझसे पनाह माँगता है तू इसको पनाह दे।

जहन्नम की आग की हौलनाकियाँ

हज़रत उमर रदि अल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत है कि एक मरतबा हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम ऐसे वक़्त में तशरीफ़ लाए कि उस वक़्त में उससे पहले नहीं आते थे, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम खड़े हो गए और फ़रमाया जिबरईल! क्या बात है मैं तुम को मुतग़य्यर (बदला हुआ) देख रहा हूँ। जिबरईल ने अर्ज़ की मैं उस वक़्त आपके पास आया हूँ जब कि अल्लाह तआ़ला ने जहन्नम को दहकाने का हुक्म दिया है। आप ने फ़रमाया जिबरईल मुझे उस आग या जहन्नम के बारे में बताओ। जिबरईल अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ की कि अल्लाह तआ़ला ने जहन्नम को दहकाने का हुक्म दिया और उसमें एक हज़ार साल तक आग दहकाई गई यहाँ तक कि वह सफ़ेद हो गई, फिर उसे एक हज़ार साल तक और भड़काने का हुक्म मिला यहाँ तक कि वह सुर्ख़ हो गई, फिर उसे अल्लाह तआ़ला के हुक्म से एक हज़ार साल तक और भड़काया गया यहाँ तक कि वह बिल्कुल सियाह (काली) हो गई। अब वह सियाह और तारीक है, न उसमें चिंगारी रौशन होती है और न ही

उसका भड़कना ख़त्म होता है और न उसके शोले बुझते हैं। उस ज़ात की क़सम जिसने आप को नबी—ए बर—हक़ बनाकर मबऊस फ़रमाया है, अगर सुई के नाके के बराबर भी जहन्नम को खोल दिया जाए तो तमाम अहले ज़मीन फ़ना हो जाएं और क़सम है उस ज़ात की जिसने आप को हक़ के साथ भेजा, अगर जहन्नम के फ़िरिश्तों में से एक फ़िरिश्ता दुनिया वालों पर ज़ाहिर हो जाए तो ज़मीन की तमाम मख़लूक़ उसकी बद—सूरती और बदबू की वजह से हलाक हो जाए। और क़सम है उस ज़ात की जिसने आपको हक़ के साथ मबऊस फ़रमाया, अगर जहन्नम की ज़न्जीरों का एक ह़लक़ा जिसका अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आने करीम में ज़िक्र किया है, दुनिया के पहाड़ों पर रख दिया जाए तो वह रेज़ा रेज़ा हो जाएं और वह हलक़ा तहतुससरा में जा ठहरे। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने यह सुनकर फ़रमाया बस जिबरईल बस। इतना तज़किरा ही काफ़ी है, मेरे लिए यह बात इन्तिहाई परेशान करने वाली है।

रावी कहते हैं कि तब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने जिबरईल को देखा वह रो रहे हैं। आप ने फ़रमाया जिबरईल! तुम क्यों रोते हो? तुम्हारा तो अल्लाह तआ़ला के यहाँ बहुत बड़ा मक़ाम है। जिबरईल ने अर्ज़ की मैं क्यों न रोऊँ? मैं ही रोने का ज़्यादा हक़दार हूँ, क्या ख़बर अल्लाह तआ़ला के

इल्म में मेरा इस मक़ाम के अलावा कोई और मक़ाम हो, क्या ख़बर मुझे कहीं इब्लीस की तरह न आज़माया जाए वह भी तो फ़िरिश्तों में रहता था और क्या ख़बर मुझे हारूत मारूत की तरह आज़माइश में न डाल दिया जाए। तब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम और जिबरईल अलैहिस्सलाम दोनों अश्कबार हो गए और यह अश्क (आँसू) बराबर जारी रहे यहाँ तक कि आवाज़ आई ऐ जिबरईल! ऐ मुहम्मद! अल्लाह तआ़ला ने तुम दोनो को अपनी नाफ़रमानी से महफ़ूज़ कर लिया है। इसके बाद जिबरईल अलैहिस्सलाम आसमानों की तरफ़ परवाज़ कर गए।

(अत–तरग़ीब वत तरहीब)

मुसलमानो! जहन्नम की हौलनाकियों पर ग़ौर करो और उससे पनाह माँगो। और बचो उन कामों से जिनका बदला जहन्नम है। अगर तुम्हें आग के जलाने पर कोई शक है तो ज़रा अपनी उंगली इस दुनियावी आग में डाल कर देखो तो तुम्हें पता चल जाएगा। जब कि दुनिया की इस आग को जहन्नम की आग से कोई निस्बत नहीं। लेकिन सोचो तो जब यह दुनिया की आग का एक कोयला अगर तुम्हारे जिस्म पर लग जाए तो तुम चीख़ने चिल्लाने लगो और यह आग दुनिया के बहुत सख़्त अज़ाबों में शुमार की जाती है, तो उस जहन्नम की आग का क्या आलम होगा

जिससे यह दुनिया की आग भी पनाह माँगती है। अल्लाह तआ़ला हमें उस आग से महफ़ूज़ फ़रमाए।

जहन्नम के अज़ाब

जहन्नमियों को जहन्नम में तरह तरह के अज़ाबों का सामना करना पड़ेगा। उन अज़ाबों पर ग़ौर करो और इबरत हासिल करो। और बचो उन कामों से जिन कामों की वजह से यह अज़ाब दिया जाएगा।

हज़रत उमर रदि अल्लाहु तआ़ला अन्हु फ़रमाया करते थे कि जहन्नम को अक्सर याद किया करो क्योंकि इसकी गर्मी सख़्त, इसकी गहराई बे—हद और इसमें लोहे के हथौड़े हैं। (सुनने तिर्मिज़ी)

मरवी है कि अगर जहन्नम का हथौड़ा जो लोहे से तैयार किया हुआ है, ज़मीन पर रख दिया जाए और जिन्न व इन्सान मिल कर उसे उठाना चाहें तो उसे उठा नहीं सकेंगे। (अलमुस्तदरक अलससहीहैन)

जहन्नम में बहुत बड़े—बड़े साँप और बख़्ती ऊँट के बराबर बिच्छू होगे जो अगर एक बार काट लें तो उससे दर्द, जलन और बे—चैनी हज़ार साल तक रहे। जहन्नमियों को तलछट की तरह बहुत खौलता हुआ पानी पीने को दिया जाएगा कि जैसे ही उस पानी को मुँह के क़रीब ले जाएंगे उसकी गर्मी और तेज़ी से चेहरे की खाल जल कर गिर जाएगी। गर्म पानी उनके सरों पर डाला जाएगा और जहन्नमियों के बदन

से निकली हुई पीप उन्हें पिलाई जाएगी। काँटेदार थूहड़ उन्हें खाने को दिया जाएगा, वह ऐसा होगा कि अगर उस की एक बूँद दुनिया में आ जाए तो उसकी जलन और बदबू से सारी दुनिया का रहन–सहन बर्बाद हो जाए। जहन्नमी जब थूहड़ को खाएंगे तो उनके गले में फँस जाएगा। उसे उतारने के लिए जब वह पानी माँगेंगे तो उन्हें वही तेल की जली हुई तलछट की तरह खौलता हुआ पानी दिया जाएगा। वह पानी पेट में जाते ही आँतों को टुकड़े टुकड़े कर देगा और आँतें शोरबे की तरह बह कर क़दमों की तरफ़ निकलेंगी। अल्लाह तआ़ला हम सबको जहन्नम के अज़ाब से महफ़ूज़ फरमाए। आमीन।

अब तक जो भी बयान हुआ वह तरहीब पर था। असलाफ़े किराम की इत्तिबा करते हुए अब तरग़ीब के तअ़ल्लुक़ से कुछ बयान किया जा रहा है। क्योंकि हमारे असलाफ़े किराम की अक्सर किताबें जो वअ़्ज व नसीहत पर मुशतमिल हैं उनमें तरग़ीब और तरहीब दोनों ही का बयान होता है।

जन्नत का बयान

जन्नत एक मकान है जिसको अल्लाह तआ़ला ने ईमान वालों के लिए बनाया है। उसमें ऐसी ऐसी नेमतें रखी गई हैं जिनको न आँखों ने देखा, न कानों ने सुना और न कोई इन नेमतों का ख़्याल कर सकता है।

जन्नत की कोई औरत अगर ज़मीन की तरफ़

देख ले तो ज़मीन से आसमान तक रौशन हो जाए, चाँद और सूरज की रौशनी फीकी पड़ जाए और पूरी दुनिया उसकी खुशबू से भर जाए, कम दर्जे के जन्नती के लिए अस्सी हज़ार (80,000) ख़ादिम और बहत्तर (72) बीवियाँ होंगी और उनको ऐसे ताज मिलेंगे कि उसमें का एक कम दर्जे का मोती पूरी दुनिया को चमका दे। जन्नतियों को जन्नत में हर क़िस्म की लज़्ज़त वाले फल और खाने मिलेंगे। जो चाहेंगे फ़ौरन उनके सामने आ जाएगा। अगर किसी चीज़ के पीने को जी चाहेगा तो उस चीज़ से भरा हुआ गिलास फ़ौरन हाथ में आ जाएगा। गरज़ यह कि जन्नती को हर तरह का आराम और चैन व सुकून मिलेगा।

आख़िरी बात

यह सब जो कुछ ऊपर बयान हुआ इसका मक़सद यह है कि लोग इसको पढ़कर इबरत हासिल करें। खुद भी नेक आमाल करें और दूसरों को भी नेकी की तरफ़ दावत दें और उन कामों से बचें जिन कामों के बदले आख़िरत में सख़्त दुशवारियों का सामना करना पड़ेगा।

मुसलमानो! यह दुनिया चन्द दिनों की है इसकी महब्बत में अपनी आख़िरत बर्बाद मत करो। आज ही अपने गुनाहों से सच्ची तौबा करो और रब की फ़रमाँबरदारी में लग जाओ। इसी में दुनिया और आख़िरत की कामयाबी है। अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।